Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XVI, Oct-2014, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

REVIEW ARTICLE

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन के संबंध का अध्ययन

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XVI, October-2014, ISSN 2230-7540

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन के संबंध का अध्ययन

Pratibha Sharma[1] Dr. Bhagwati Lal Vyas[2]

[1]Research Scholar, Mewar University, Gangrar, Chittorgarh, Rajasthan

[2]Supervisor, Mewar University, Gangrar, Chittorgarh, Rajasthan

---------------------------------x---------------------------------

भूमिका –

शिक्षा मानवीय शक्ति का सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षा ही व्यक्ति का सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक विकास करती है। शिक्षा ही समाज को भी दिशा प्रदान करती है तभी व्यक्ति, समाज व राष्ट्र उन्नती की ओर अग्रसर होता है। प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले के शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन के बीच संबंध का अध्ययन किया गया है।

यहा शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है :–''छात्रों के द्वारा पढ़ी गई कक्षा के परिणामों के प्राप्तांक उनकी शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। अर्थात छात्रों के एक सत्र में पढ़ी गई कक्षा का मूल्यांकन करने के बाद उससे प्राप्त अंको का उच्च या निम्न स्तर ही छात्रों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर कहलाता है। यदि छात्र 60 प्रतिषत से अधिक प्राप्तांक लाता है तो वह उनकी उच्च शैक्षिक उपलब्धि है, तथा 60 प्रतिशत से कम प्राप्तांक लाने पर निम्न शैक्षिक उपलब्धि मानी जायेगी।

किशोरावस्था प्रारम्भ होने के साथ ही विद्यार्थियों को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करता होता है अतः वह प्रत्येक परिस्थितियों में अपने आप को समायोजित नहीं कर पाता है, जिससे की उसके शैक्षिक जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है और उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होती है अतः विद्यार्थियों के समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है इसी का अध्ययन प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

किशोरावस्था में बालक को गृह वातावरण, विद्यालय के वातावरण, मित्र मण्डली आदि सभी के साथ समायोजन बिठाना होता है। यदि वह इन सभी चरों से तालमेल नहीं बिठा पाता तो कुसमायोजित हो जाता है और उचित तालमेल बिठाने पर संतुलित रहता है। यदि बालक कुसमायोजित हो जाता है तो उसका बुरा प्रभाव विद्यार्थी के षैक्षिक जीवन पर भी पड़ेगा अतः इससे उसका शैक्षिक उपलब्धि स्तर भी प्रभावित हो सकता है। बालक के घर का वातावरण यदि कलहपूर्ण है या वह निम्न स्थिति का बालक है तो विद्यालय के अपने अन्य मित्रों के साथ तालमेल बिठाना उसके लिये मुश्किल हो सकता है, या अगर बालक ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित है और उसका विद्यालय शहरी क्षेत्र से है तब भी अन्य छात्रों के साथ उसे सामंजस्य बिठाना मुष्किल हो जाता है।

यदि बालक सांवेगिक तौर पर कमजोर है तो उसका सांवेगिक समायोजन भी बिगड़ सकता है जिसका सीधा प्रभाव उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ सकता है।

अतः यहां समायोजन की परिभाषा स्पष्ट करना आवष्यक है :–

वोरिंग के अनुसार (1962) – समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यकताओं ओर इन आवष्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है ।

आईजनेक (1972) के अनुसार :– समायोजन वह अवस्था है जिसमें एक और व्यक्ति की आवश्यकताएें तथा दूसरी और वातावरण के अधिकारों में पूर्ण सन्तुष्टि होती है अथवा यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा इन दो अवस्थाओं में सामंजस्य प्राप्त होता है।

अतः समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य है क्योंकि प्रत्येक प्रणी के सामने कुछ न कुछ समस्याएं होती है। एक व्यक्ति कितना प्रभावषाली है यह उसकी समस्याओं की संख्या से ज्ञात नहीं होता है, बल्कि उसकी प्रभावशीलता इस बात से स्पष्ट होती है कि वह इन समस्याओं को तथा जीवन की चुनौतियों को किस प्रकार स्वीकार करता है । अतः स्पष्ट है कि समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है न कि स्थिर।

इसलिए गेट्स ने कहा है :– समायोजित व्यक्तित्व वह है जिसकी आवश्यकताऐं एवं तृप्ति सामाजिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति के साथ संगठित हो।

कुछ पूर्व अध्ययन इस क्षेत्र में किये गये वह निम्न है –

- ✓ मूरे, प्रशान्त (1991) पी.एच.डी पुणे विष्वविद्यालय द्वारा किये गये अध्ययन के अनुसार विद्यालयी वातावरण व गृह वातावरण द्वारा विद्यार्थियों का समायोजन प्रभावित होता है। तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी इससे कई हद तक प्रभावित होती है।

- ✓ डॉ. अनिता सोनी – 2006 – द्वारा सहशिक्षा में अध्ययनरत बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के अनुसार – सहशिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं को समायोजन करने में कई

प्रकार की समस्याओं का सामना करना होता है तथा उनका व्यक्तित्व पूर्ण संतुलित नहीं रह पाने के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

✓ डॉ. अमी राठौड़ 2008 के अनुसार – आत्म नियंत्रित विद्यार्थियों की संवेगात्मक समायोजन, बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धियों में धनात्मक उच्च सहसम्बन्ध पाया गया। वर्तमान अध्ययन में मुख्यतः विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य :–

❖ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन के स्तर का अध्ययन करना ।

❖ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन व उनकी शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करना ।

शोध परिकल्पना :–

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि के माध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है ।

विधि :– प्रस्तुत अध्ययन का प्रारूप सर्वेक्षण विधि पर आधरित है।

न्यादर्श प्रतिदर्ष :– न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के 250 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें कक्षा 8, 9, 10 के विद्यार्थी सम्मिलित है ।

अध्ययन के उपकरण :–

● प्रस्तुत अध्ययन में प्रो.के.पी. सिन्हा व आर.पी. सिंह की समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है। इस प्रश्नावली में हां/नहीं वाले 60 प्रश्न है ।

● शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी हेतु अकादमिक रिकार्ड फॉर्म का निर्माण किया जिसमें छात्र–छात्राओं के वार्षिक परीक्षा के अंको को सम्मिलित किया गया है ।

उपकरण की विश्वसनीयता व वैधता :–

उपर्युक्त दोनों उपकरणों की विश्वसनीयता परीक्षण पुनर्परीक्षण विधि द्वारा ज्ञात की गयी है। उपकरणों की रूप वैद्यता, संबंधित विषेषज्ञों के परामर्श एवं समालोचना द्वारा निर्धारित की गयी ।

सांख्यिकी विश्लेषण :– आंकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है जिसमें माध्य, प्रतिशतांक तथा प्रतिशत का प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्ति दो चरों के मध्य संबंध का विष्लेषण करने हेतु काई वर्ग परीक्षण का उपयोग किया गया। चरों के संबंध की सार्थकता को 0.05 विष्वसनीयता स्तर पर परीक्षित किया गया ।

उद्देश्य :– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन के स्तर का अध्ययन करना ।

तालिका 1

समायोजन के मानक स्तर	:	विद्यार्थी (प्रतिशत में)
निम्न	:	27.10
औसत	:	50.81
उच्च	:	21.67

उपरोक्त तालिका में यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के 27.10 प्रतिशत विद्यार्थियों के समायोजन का स्तर निम्न तथा 21.67 विद्यार्थियों का समायोजन स्तर उच्च पाया गया जबकि 50.8 प्रतिशत विद्यार्थियों का समायोजन औसत स्तर पर पाया गया ।

उद्देश्य :– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन व उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना ।

तालिका – 2

समायोजन	शैक्षिक प्रतिशत कम	औसत	अधिक	योग	काई परीक्षण
निम्न	25:	20 :	55:	100	3.85
औसत	(41.50):	(59.48):	(65.02):	166	
उच्च	(23.50):	(33.68):	(36.82):	94	

उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि उद्देश्य द्वितीय के अन्तर्गत समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध ज्ञात करने हेतु काई वर्ग परीक्षण की गणना की गयी है गणना द्वारा काई वर्ग परीक्षण का मान 3.85 ज्ञात हुआ। जबकि 0.05 स्तर पर सार्थकता स्तर का सारणी मान 9.49 है। जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना विद्यार्थियों के समायोजन व उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया, अतः परिकल्पना स्वीकृत की गयी ।

परिणाम –अध्ययन द्वारा निम्न परिणाम प्राप्त हुये है – माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन व उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया ।

निष्कर्ष –

1. 55 प्रतिषत विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि अधिक पाई गई जिनका की समायोजन निम्न था अर्थात् निम्न समायोजन करने वाले 55 प्रतिषत विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि उच्च पाई गई जो यह प्रदर्षित करता है कि विद्यार्थियों का समायोजन अच्छा ना होने पर भी उनकी षैक्षिक उपलब्धि प्रभावित नहीं हुई है। षिक्षकों व अभिभावको से चर्चा करने पर यह ज्ञात हुआ कि छात्रों का निम्न समायोजन होने का कारण उनके घर का वातावरण व विद्यालय का वातवरण है, क्योंकि छात्र–छात्राऐं अपने गृह की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के कारण बालक विद्यालयी वातावरण में या मित्रों के साथ तालमेल नहीं बिठा पाते ।

2. औसत समायोजन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि 65 प्रतिषत सबसे अधिक पाई गई अर्थात् जो छात्र औसत स्तर पर समायोजन कर पाते है घर में व विद्यालय में भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर उसके समायोजन स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि वे परिस्थितियों के अनुसार तालमेल बैठाकर अपना कार्य कर लेते हैं।

3. उच्च स्तर पर समायोजन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिकतम 36 प्रतिषत पाई गई अर्थात् उच्च स्तर पर समायोजन करने वाले छात्रों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि औसत समायोजन करने वाले विद्यार्थियों की भी उच्च षैक्षिक उपलब्धि पाई गई ।

4. प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि औसत समायोजन स्तर प्राप्त करने वाले छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि भी औसत पाई गई, लगभग 60 प्रतिषत पाई गई इसका कारण है कि जो छात्र–छात्राएं अपने आस–पास के वातावरण के साथ अनुकूलित होकर कार्य करते है शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक प्रभावित नहीं होती।

5. अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थियों का समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध तो है किन्तु सार्थक संबंध नहीं पाया गया। अभिभावकों के बीच यदि घर में कलहपूर्ण वातावरण है तो बालक वहां अपने आपको समायोजित नहीं कर पाता है तथा यदि उनके घर की सामाजिक व आर्थिक स्थिति उच्च व अच्छी है तो वह अन्य स्थानों पर समायोजन करने में समर्थ होते है विद्यालय में उनके मित्र शीघ्र बन जाते है और वे स्वस्थ संतुलित होकर अनुकूलन कर लेते है क्योंकि उनके अभिभावकों द्वारा भी उनकी आष्यकताओं को समय पर ध्यान देकर पूर्ण किया जाता है। जबकि निम्न परिवारों के विद्यार्थी सभी स्थानो पर अनुकूलन करने में असमर्थ रहते है क्योंकि वह शीघ्र ही सबके साथ समायोजित नहीं हो पाते, मित्र बनाने में हिचकिचाहट महसूस करते हैं। अतः विद्यार्थियों के माता पिता की षिक्षा उनके परिवार का स्तर, विद्यालय का वातावरण आदि घटक समायोजन को प्रभावित करते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ :–

- प्रस्तुत अध्ययन अभिभावकों, शिक्षण संस्थानों व अध्यापकों को उन व्यवहारों को करने को प्रेरित करेगा जो विद्यार्थियों को समायोजन करने में सहयोग प्रदान करे।

- प्रस्तुत अध्ययन अध्यापकों, शिक्षण संस्थाओं तथा अभिभावकों को बालक–बालिकाओं को समायोजन करने में व शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में सहायता प्रदान कर सकेगा ।

- प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों को वातावरण के साथ अधिक से अधिक तालमेल बिठाने में विद्यालय के शिक्षकों, माता–पिता, मित्र मण्डली सभी को सहायता करनी चाहिये व उचित मार्गदर्शन प्रदान कर उन्हें कुण्ठित व कुसमायोजित होने से बचाया जाये ताकि इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर बुरा प्रभाव न पड़े।

- प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह ज्ञात होता है कि छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने हेतु उन्हें समय पर उचित मार्गदर्शन षिक्षण संस्थाओं द्वारा प्रदान किये जाने चाहिए ।

- प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि स्तर को बढ़ाने हेतु निदानात्मक शिक्षण व उपचारात्मक शिक्षण कराया जाये ताकि वह प्रगति कर सके।

अध्ययन का परिसीमन–

- प्रस्तुत अध्ययन केवल राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले के शहरी क्षेत्र तक ही सीमित है।

- प्रस्तुत अध्ययन केवल माध्यमिक स्तर तक ही सीमित है ।

- प्रस्तुत अध्ययन केवल 250 विद्यार्थियों तक ही सीमिति है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- Aehari Alka, 1998, analyzing teacher education curriculum in the context of requisite abilities for effective teaching. Vol. 33 (1) Jan. 1998, Sixth survey of educational research and training P.N. 36.

- जनरल ऑफ द इण्डियन अकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, वॉल्यूम, 33

- मनोविज्ञान तथा षिक्षा में षोध विधियां, प्रकाषन, भारती भवन, पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना

- पाठक, डॉ. पी.डी., षिक्षा मनोविज्ञान, आगरा

- वर्मा, डॉ. प्रिती, श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन., आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, आगरा

- इण्डियन एज्जूकेशनल रिव्यू वोल्यूम 50 जनवरी 2012 फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

- Yadav, S.K. and Simbul 2006-teacher education in India. A weekly journal of higher educational association of India Vol. 44 Set. – 2006

✓ शिक्षा विमर्श–शैक्षिक संवाद की पत्रिका, जगतपुरा, जयपुर–राजस्थान पेज नं. 25